Indian J. Soc. & Pol. 04(03):2017:115-116 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
Special Print Issue 2017 **UGC Journal List No 47956**

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में आचार्य कौटिल्य – एक संक्षिप्त अध्ययन

सन्तोष कुमार पाण्डेय[1]
[1]प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान, आर०एस० के०डी० पी० कालेज जौनपुर, उ0प्र0,भारत

ABSTRACT

प्राचीन भारतीय राजनैतिक चिन्तन के इतिहास में आचार्य कौटिल्य को एक उच्च कोटि का दार्शनिक और शासन–कला तथा राजनीति का सबसे महान प्रतिपादक माना जाता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसका एकमेव विषय राजनीति है। सालेटोर के अनुसार प्राचीन भारत की राजनीतिक विचार धाराओं में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य कौटिल्य की विचारधाराए है यह ग्रन्थ आर्य जाति की उस राजनीति बुद्धिमत्ता का निचोड़ है जिसका निर्वचन और प्रतिवादन वृहस्पति भारद्वाज, वात व्याधि और अन्य लेखको ने किया और कौटिल्य की अपूर्व वृद्धि ने प्रकाशमान किया। वाण ने अर्थशास्त्र को कूटनीति का विज्ञान और कला बतलाया हैं। अर्थशास्त्र के महत्व के सम्बन्ध में रामास्वामी का यह मत उल्लेखनीय है कि – '' अर्थशास्त्र कौटिल्य से पूर्व की सेनाओं में इधर–उधर फैली राजनीतिक बुद्धिमत्ता और शासन कला के सिद्धान्तों का संग्रह है।

KEYWORDS: *कौटिल्य, अर्थशास्त्र, भारतीय दर्शन*

कौटिल्य शासन कला को एक पृथक तथा विशिष्ट विज्ञान का रूप देने के प्रयत्न में उसको नए रूप में वर्णित किया है। इसका महत्व चार से है–

(1) उसका अर्थशास्त्र पूर्वगामी सभी अर्थशास्त्रों का संग्रह अथवा सार है। कौटिल्य का उद्येश्य पूर्णतया व्यावहारिक था और अर्थशास्त्र की रचना इहलोक तथा परलोक की प्राप्ति के मार्ग दर्शन हेतु की गई।

(2) कौटिल्य वास्तव में यथार्थवाद था और उसने ऐसी समस्याओं के विषय में लिखा है जिनका मनुष्य को इहलोक में सामना करना पड़ता हैं

(3) राज्य के विषय में लिखने वाले सभी महान लेखकों व शिक्षको में कदाचित वह अकेला है जिसने राजनीति के विषय में स्वतंत्र रूप से अर्थात उसे धर्म से पृथक करके लिखा है।

(4) कौटिल्य ने देश को एक सृदृढ़ एवं केन्दीयकृत शासन प्रदान किया जैसा कि उससे पूर्व भारतीयों ने ही जाना था।

वस्तुतः प्राचीन भारत की अर्थशास्त्रीय परम्परा का सबसे अधिक लोकप्रिय पूर्णतः वैज्ञानिक और अधिकारपूर्ण निर्वचन कौटिल्य का अर्थशास्त्र है। यह ग्रन्थ आर्य जाति की उस राजनीति बुद्धिमत्ता का निचोड़ है जिसका निर्वचन और प्रतिवादन वृहस्पति भारद्वाज, वात व्याधि और अन्य लेखको ने किया और कौटिल्य की अपूर्व वृद्धि ने प्रकाशमान किया। वाण ने अर्थशास्त्र को कूटनीति का विज्ञान और कला बतलाया हैं।[2] अर्थशास्त्र के महत्व के सम्बन्ध में रामास्वामी का यह मत उल्लेखनीय है कि – '' अर्थशास्त्र कौटिल्य से पूर्व की सेनाओं में इधर–उधर फैली राजनीतिक बुद्धिमत्ता और शासन कला के सिद्धान्तों का संग्रह है। कौटिल्य शासन कला को एक पृथक तथा विशिष्ट विज्ञान का रूप देने के प्रयत्न में उसको नए रूप में वर्णित किया है।

कुछ विचारकों का कहना है कि कौटिल्य किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं वरन यह एक राजनीतिक परम्परा का प्रतीक था अथवा यह एक ऐसे महान कूटनीतिज्ञ की ओर संकेत करता है जो कि अर्थशास्त्र के वर्णित का विषय है। इस कूटनीति के द्वारा शत्रु के विरूद्ध चालबाजी तथा धोखेबाजी पूर्ण व्यवहार किया जाता था जो नैतिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं था। इस प्रकार के विचार भ्रामक है और किसी विश्वसनीय निष्कर्ष पर नहीं ले जाते। गणपति शास्त्री का मत है कि अर्थशास्त्र के रचनाकार को कौटिल्य नाम दिया गया, इसका कारण यह है कि वह कुटल गोत्र का वंशज था। उसका जन्म चनक में हुआ था, इसलिए उसे चाणक्य कहा गया। उसके माता पिता का दिया नाम हुआ विष्णुगुप्त था। एक व्यक्ति के तीन नाम होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, इसके उदाहरण हमें आज भी मिल सकते है। कौटिल्य चन्द्रगुप्त का राजगुरू था और उसके दरवार में ठीक उसी प्रकार रहा जिस प्रकार कि सिकन्दर के दरवार में अरस्तू रहा।

आचार्य दीपकर ने तर्क सहित यह स्थापित किया है कि अर्थशास्त्र का रचनाकार कौटिल्य था और वह मौर्यकालीन था। उनका अभिमत उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है, 'प्राचीन जनश्रुतियों के अनुसार कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में हुए थे और उसके साम्राज्य के मुख्य संस्थापक तथा महामंत्री अथवा महामात्य थे। परन्तु अधिकांश पाश्चात्य विद्वान अर्थशास्त्र के रचयिता को मौर्यकालीन नहीं मानते और यह भी कहते है कि अर्थशास्त्र के रचयिता प्रसिद्ध विष्णुगुप्त कौटिल्य नहीं है प्रत्युत अनके विद्वानों ने समय–समय पर एक लम्बी अवधि में इसका निर्माण किया है। परन्तु ये सभी मत अनुपयुक्त है।

जो इसे कौटिल्य की कृति नहीं मानते उन्हें स्वयं अर्थशास्त्र उत्तर देता है कि इस शास्त्र की रचना उस व्यक्ति ने की है, जिसने नन्द राज्य का उच्छेद किया है, शास्त्रों एवं

1:Corresponding Author

शास्त्रों का उद्धार किया है और मौर्य साम्राज्य की स्थापना की है। ''पुराणों एवं जैन साहित्य में स्थान–स्थान पर इसका उल्लेख है कि कौटिल्य नामक ब्राह्मण ने नन्द राज्य का उच्छेद किया एवं मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि पूरे संस्कृति साहित्य में ऐसा अभितम कहीं प्रकट नहीं किया गया है कि कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना नहीं की है, तथा उसका रचना–काल मौर्य काल से भिन्न है। इसके अतिरिक्त संस्कृत विद्धानों की यह परम्परा रही है कि उन्होंने केवल अपवाद स्वरूप में ही अपनी रचनाओं में अपने सम्बन्ध में कुछ लिखा है। परन्तु महामात्य कौटिल्य ने अपवाद स्वरू॰ में ही सही, प्रत्यक्ष रूप में स्वयं के सम्बन्ध में थोड़ा सा उल्लेख किया है।

वस्तुतः सम्पूर्ण भारतीय सांस्कृतिक बांऽमय में सब प्रकार के ज्ञान तथा उसके फलभूत विवेक को विशेष महत्व गया है। ज्ञान एवं विवेक को दो कोटियां में विभक्त किया जा सकता है आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक आध्यात्मिक ज्ञान प्रायः दर्शन का रूप लेता है और मुक्ति प्रदाता है यह भी मान्यता रही है कि ज्ञान के अभाव में मुक्ति सम्भव ही नहीं है। प्रायः समस्त दर्शनों में ज्ञान के साथ ही साथ नैतिक शुद्धता को भी मोक्ष हेतु अपरिहार्य स्वीकारा गया है। द्वितीय कोटि का ज्ञान एवं विवेक व्यवहारिक जीवन के लिए अपेक्षित है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में नीतिशास्त्रीय ग्रन्थ इसी प्रकार का विवेक प्रदान करते है। कौटलीय अर्थशास्त्र, शुक्रनीति, कामन्दीय नीतिसार, सोमदेव सूरि का नीतिवाक्यमृत अति ग्रन्थ इसी कोटि की रचनाएं है। अपनी रचना अर्थशास्त्र द्वारा कौटिल्य ने मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को सुचारू रूप से संचालित, संयमित, एवं निर्देशित करने का सफल प्रयास किया है उनकी स्पस्ट मान्यता है कि अर्थशास्त्र के माध्यम से व्यक्ति को त्रिवेर्ग (अर्थ, धर्म और काम) की प्राप्ति सम्भव होगी एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु मार्ग प्रशस्त होगा। संक्षेप में आचार्य कौटिल्य के राजनीतिक चिन्तन की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता (महत्व) निम्नांकित है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन के बीच यद्यपि वैदिक साहित्य, उत्तर वैदिक साहित्य, ब्राह्मण ग्रन्थों आदि में उपलब्ध होते है परन्तु उनमें क्रमबद्धता, निरन्तरता एवं सांगोपांगता का सर्वथा सभाव रहा है। वैदिक युग की समाप्ति के बहुत पश्चात् ही प्राचीन भारत में राजशास्त्र का शास्त्रीय अध्ययन प्रारम्भ हो सका था। आचार्य कौटिल्य ने अपनी रचना अर्थशास्त्र में तो प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन की तीन प्रमुख विचारधाराओं का उल्लेखा किया है– धर्म प्रधान विचारधारा, अर्थ प्रधान विचारधारा तथा दण्ड प्रधान विचारधारा, जिनकों आदि प्रवर्तक क्रमशः मनु, बृहस्पति वएं उशना है। मनु के अनुयायी त्रयी वार्ता एवं दण्डनीति को ही विद्या के रू॰ में मान्यता प्रदान करते हैं।

मनु के अनुसार त्रयी विद्या के अन्तर्गत ही आन्वीक्षिकी विद्याएँ है। बृहस्पति के मतानुयायियों के अनुसार, वार्ता एवं दण्डनीति दो ही विद्याएँ है ।वे अन्वीक्षिकी एवं त्रयी को पृथक विद्या नहीं स्वीकार करते है। इन दोनों के विपरीत उशना (शुक्र) के विचारधारा के समर्थक मात्र दण्डनीति को ही विद्या मानते है ।

अर्थशास्त्र में एक निष्कर्ष तक पहुँचाने के लिए कुछ क्रमिक सोपनों को काम में लिया गया है। तथ्यों का वर्णन, स्थान, प्रक्रिया एवं प्रभाव आदि के सन्दर्भ में है। स्थान–स्थान पर पूर्व वर्णित लोगों को सन्दर्भित किया गया है तथा वैकल्पिक नीतियॉ एवं कार्यों को बताया गया है। तत्कालीन जटिल राजनीतिक वातावरण को स्पष्ट करने के लिए कौटिल्य ने अपनें निजी शब्दों का प्रयोग किया है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र को उस समय स्थित राजनीति के ग्रन्थ पर ही आधारित नहीं रखा वरन उस व्यक्तिगत अनुभव एवं ज्ञान पर भी आश्रित रखा जो उन्होनें तत्कालीन राजनीतिक स्थिति और संस्थाओं करने पर प्राप्त किया था। प्रो० एम० वी० कृष्णाराव के कथनानुसार अरस्तु की भॉति उन्होनें अपने सैद्धान्तिक ज्ञान को अपने समय की सरकार के रूपों एवं व्यवहारों को व्यक्तिगत अनुभवों से सही बनाया।

इसी प्रकार से आचार्य कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राजपथ सम्बन्धी कर्तव्यो मंत्रिपरिषदीय व्यवस्था तथा राजनीतिक व्यवस्था के अन्य अंगों से सम्बन्धित विचार आज भी अत्यधिक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है। राजा के कार्य को बहुत व्यापक रू॰ देकर तथा राज्य की सम्पूर्ण संस्थाओ को उसी सूत्र में पिरोकर एक ऐसे आदर्श दार्शनिक शासक की कल्पना की गयी है, जो रिपब्लिक में उल्लिखित प्लेटो के दार्शनिक शासक से उच्चतर एवं सर्वथा व्यवहारिक है। उन्होनें राज्य के सर्वोच्च कार्यपालक (राजा) में जिन गुणों की अपेक्षा की है वे वर्तमान समय में भी किसी भी देश के सर्वोच्च कार्यपालिका अधिकारी हेतु अनुकरणीय है। आचार्य कौटिल्य का राजा, शक्ति की नहीं अपितु सद्गुणों, उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य परायणता का प्रतीक है। प्रजा रंजन ही उसकी शाक्ति, वैभव एवं महानता का आधार है। आज भी सर्वोच्च कार्यपालिका हेतु आचार्य कौटिल्य के विचार मार्ग दर्शन करने में सक्षम है।

सन्दर्भ

कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र
आचार्य दीपांकरः कौटिल्यकालीन भारत